PRHDKV

19. सूक्तयः (खण्ड-अ)

1. अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

अर्थ- अधिकता सब जगह छोड़ने योग्य है ।

2. अल्पविद्या महागर्वः ।

अर्थ- कम विद्या वाले महान गर्व करने लगते हैं ।

3. यथा बीजं तथा निष्पत्तिः ।

अर्थ- जिस प्रकार का बीज होगा उसी प्रकार फल उत्पन्न होगा ।

4. सर्वः सर्वं न जानाति ।

अर्थ- सभी सब कुछ नहीं जानते ।

5. धर्मस्य मूलम् अर्थः ।

अर्थ- धर्म का मूल धन है ।

6. मौनं सर्वार्थ साधनम् ।

अर्थ- मौन सबका साधन है ।

7. श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् ।

अर्थ- श्रद्धावान् को ज्ञान प्राप्त होताहै ।

8. लोभः पापस्य कारणम् ।

अर्थ- लोभ पाप का कारण है।

9. विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ।

अर्थ- विनाश के समय बुद्धि विपरीत हो जाती है।

10. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।

अर्थ- हितकर और मनोहारी वचन दुर्लभ है ।

शब्दार्थाः

अति	-	अधिकता
वर्जयेत्	-	छोड़ना चाहिए (छोड़ने योग्य)
अल्पविद्या	-	थोड़ा ज्ञान

महागर्वः	-	महान गर्व, घमंड
निष्पतिः	-	फल
मौनम्	-	चुपचाप
धर्मस्य	-	धर्म का
लोभः	-	लालच
विपरीत बुद्धि	-	उल्टी बुद्धि
मनोहारि	-	सुन्दर
वचः	-	वचन

अभ्यासः

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. धर्मस्य ..... अर्थः ।
ख. मौनं ..... साधनम् ।
ग. लोभः ..... कारणम् ।
घ. हितं ..... च दुर्लभं वचः ।

2. संस्कृत सूक्तियों का हिन्दी में अर्थ लिखिए-

क. यथा बीजं तथा निष्पत्तिः ।
ख. सर्वः सर्वं न जानाति ।
ग. श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् ।
घ. अल्प विद्यो महागर्वः ।
ङ. अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए-

क. राम फल खाता है ।
ख. सीता पत्र लिखती है ।
ग. श्रद्धावान को ज्ञान प्राप्त होताहै ।
घ. विद्यावान नम्र होता है ।
ङ. लोभ पाप का कारण है ।

5. 'ज्ञा' धातु का लट्लकार परस्मैपद में रूप चलाइए-